

9 MAY 2019

TAKING TENSIONS SERIOUSLY

संदर्भ

- अमेरिका ने भारत को ईरान से कच्चे तेल के निर्यात पर लगाए गए प्रतिबंधों से छूट देने की अवधि को समाप्त कर दिया है। इसका भारत-अमेरिका संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा क्योंकि नई दिल्ली, तेहरान (ईरान) के साथ ऊर्जा संबंधों को महत्व देता है। यह भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों के लिए कई अन्य घटनाओं की कड़ियों से संबंधित है जिसमें अमेरिका द्वारा भारत को मिले व्यापार विशेषाधिकार को वापस लेने का निर्णय, ई-कामर्स, बौद्धिक संपदा अधिकारों और डेटा स्थानीयकरण के साथ भारत द्वारा अमेरिकी उत्पादों पर लगाए जाने वाले करों का संदर्भ शामिल है।

भारत-अमेरिका संबंध

- **भारत** - US व्यापार और आर्थिक गतिविधियों में इस तरह की तल्खी नया नहीं है। विशेष रूप से ट्रम्प प्रशासन के युग में इसमें तेजी आई है।
- **अमेरिका** - भारत दोनों पक्षों ने इन मतभेदों को दूर करने के लिए अनेक बिंदुओं पर बातचीत का प्रस्ताव रखा है। भारत अन्य देशों से कच्चे तेल के आयात को बढ़ाएगा, GSP (व्यापार विशेषाधिकार) वापसी का भारत की अर्थव्यवस्था पर न्यूनतम प्रभाव पड़ेगा। हाल ही में अमेरिका-भारत सीडिओ फोरम और भारत यू-एस वाणिज्यिक संवाद तनाव कम करने के लिए आपसी संवाद के द्वारा इन तल्खियों को दूर करने के प्रयास में लगे हैं।
- **निश्चित रूप से भारत** - US सुरक्षा संबंधों से अधिक अपने संबंधों का विस्तार कर रहे हैं। हाल ही में दोनों राष्ट्रों ने स्वच्छ ऊर्जा से लेकर नवाचार तक की पहल पर सहयोग की संभावनाओं पर काम किया है। कुछ विरोधाभासों के बावजूद दोनों देशों के मध्य पिछले दशक में वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार में वृद्धि हुई है।
- अमेरिका - भारत लंबे समय से इस बात पर सहमत होने के लिए प्रयासरत है कि रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा दिया जाए। यह साझेदारी, विश्वास और सहयोग के स्तर पर किया जाना चाहिए।

ईरान पर प्रतिबंध के मायने

- अमेरिका ने प्रतिबंध की घोषणा करते हुए कहा है कि उसने यह फैसला ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर लगाम लगाने और अमेरिका के साथ दोबारा बातचीत के लिये उस पर दबाव डालने के उद्देश्य से किया है।
- उसका यह फैसला ईरान के तेल निर्यात को शून्य तक लाना और वहाँ के राजस्व के प्रमुख स्रोत को खत्म करना है।
- उल्लेखनीय है कि ईरान के साथ 2015 में हुए ऐतिहासिक परमाणु समझौते से हटते हुए अमेरिका ने पिछले साल नवंबर में ईरान पर पुनः प्रतिबंध लगाया था।
- अमेरिका ने दुनिया के सभी देशों को चेतावनी देते हुए कहा था कि अगर वे अमेरिकी प्रतिबंधों से बचना चाहते हैं तो ईरान से कच्चे तेल का आयात बंद कर दें।
- हालाँकि अमेरिका ने भारत समेत अन्य सात देशों को अगले 6 महीने, यानी 2 मई, 2019 तक के लिये प्रतिबंधों में छूट दी थी। इसके साथ ही ईरान से तेल आयात में कटौती की भी शर्त लगाई गई थी।
- ईरान पर प्रतिबंध लगने से तेल संकट की आशंका देखते हुए अमेरिका लगातार सहयोगी देशों के साथ बातचीत कर रहा है ताकि तेल का वैकल्पिक स्रोत तलाशा जा सके। इन विकल्पों में UAE और सऊदी अरब भी शामिल हैं।

भारत पर प्रतिबंध का प्रभाव

- ईरान से तेल आयात करने वालों में चीन के बाद भारत दूसरा बड़ा अयातक देश है। भारत ने ईरान से वर्ष 2017-18 में जहाँ 2 करोड़ 26 लाख टन कच्चे तेल की खरीदारी की थी, वहीं प्रतिबंध लागू होने के बाद इसे घटाकर 1 करोड़ 50 लाख टन सालाना कर दिया था।
- भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिये आयात पर सबसे ज्यादा निर्भर करता है। ऐसे में ईरान से तेल खरीद पर लगे अमेरिका के प्रतिबंध के बाद भारत की आपूर्ति पर काफी असर पड़ने की संभावना है।
- भारत अपनी जरूरत का 80 प्रतिशत तेल आयात करता है। इस बड़ी जरूरत के एक अहम हिस्से का आयात ईरान से होता है।

- इसके साथ ही जरूरत पड़ने पर भारत सऊदी अरब से अतिरिक्त 2 मिलियन टन की खरीद कर सकता है।
- इसी तरह विकल्प के तौर पर कुवैत से डेढ़ मिलियन टन और यूएई से 1 मिलियन टन कच्चे तेल की खरीद की जा सकती है।

भारत-ईरान संबंध और संभावनाएँ

- भारत और ईरान के बीच सामाजिक, आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग का इतिहास काफी पुराना है।
- सामरिक तौर पर दोनों देश एक-दूसरे के पुराने सहयोगी हैं। अफगानिस्तान, मध्य एशिया और मध्य-पूर्व में दोनों देशों के साझा सामरिक हित भी हैं।
- भारतीय कंपनियाँ ईरान में कारोबार की बड़ी संभावनाएँ देखती हैं। ईरान के तेल रिफाइनरी, दवा फर्टिलाइजर और निर्माण क्षेत्र में भारतीय कंपनियाँ पैसा लगा रही हैं।
- उपभोक्ता वस्तुओं के अलावा भारत मशीनरी, ऑटो और खनन क्षेत्र में भी ईरान के साथ सहयोग कर सकता है।
- पश्चिमी देशों के ईरान शक की नजर से देखता है। इसलिये भारत में ईरान निवेश कर सकता है। हालाँकि अमेरिका, इजराइल और सऊदी अरब के साथ ईरान के खराब रिश्तों की वजह से मध्य एशिया में भारत के लिये संतुलन बनाए रखना आसान नहीं है।
- इसके अलावा तेलका निर्यात करने वाले देशों में ईरान कई तरह की सहूलियतें और रियायतें भी देता था जैसे-भुगतान के लिये अतिरिक्त 60 दिन का समय, मुफ्त बीमा और मुफ्त शिपिंग।

भारत के पास मौजूदा विकल्प

- अमेरिकी प्रतिबंध के कारण अगर भारत ईरान से तेल आयात नहीं कर पाता है तो तेल की आपूर्ति के लिये उसकी निर्भरता सऊदी अरब तथा संयुक्त अरब अमीरात पर बढ़ जाएगी।
- ईरान से तेल आयात पर प्रतिबंध का ऐलान करने वाले अमेरिका ने भारत के लिये विकल्प का प्रस्ताव दिया है।
- फिलहाल यूएस शेल गैस भंडार से भारत 4 बिलियन डॉलर की तरल गैस की खरीद करता है। इसके अलावा यूएस से तेल की खरीद में भी बढ़ोतरी हुई है।
- तेल आयातक देशों का समूह 'ओपेक' तेल का 40 प्रतिशत वैश्विक उत्पादन करता है जो कि इसमें कटौती का ऐलान कर चुका है। इससे दुनिया भर में आपूर्ति में कमी आएगी।
- भारत की तेल आपूर्ति की मांग 25 प्रतिशत और बढ़ गई है।
- इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के पास विकल्प के तौर पर मेक्सिको है, इसके साथ भारत 0.7 मिलियन टन कच्चा तेल खरीदने का करार कर चुका है, वहीं सऊदी अरब के साथ भारत का करार 5.6 मिलियन टन के खरीदने के लिये है।
- भारत के सहयोग से चाबहार बंदरगाह का भी विकास किया गया है। इसके साथ ही भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया में अपने उत्पाद भेजने का वैकल्पिक रास्ता मिल गया है।

विशेष -

- **GSP (वरीयता की सामान्यीकृत प्रणाली)** - यह एक कारोबारी प्रोत्साहन और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए विकासशील देशों के साथ अमेरिका का व्यापारिक समझौता है। जिसके अंतर्गत चुनिंदा वस्तुओं पर आयात शुल्क में छूट प्रदान किया जाता है।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

- प्रश्न-** भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए अयात पर निर्भर है जिसका असर भारतीय बाजार के साथ आर्थिक विकास पर भी पड़ता है। आयात से अपनी ऊर्जा जरूरतों की निर्भरता कम करने के भारत सरकार के प्रयासों की समीक्षा के साथ अन्य वैकल्पिक उपायों की चर्चा कीजिए।

**9 MAY THE HINDU
CIRCLE OF LIFE
जीवन का चक्र**

संदर्भ -

- जैव-विविधता एवं पारिस्थितिकी सेवाओं के अंतर सरकारी विज्ञान नीति मंच (आईपीबीईएस) ने अपनी वैश्विक आकलन रिपोर्ट जारी कर दी। इस रिपोर्ट में ग्रह की जैव विविधता पर होने वाले खतरों से आगाह किया गया है।

मुख्य बिंदु -

- इस रिपोर्ट में कहा गया है, कि मानव ने प्रकृति का इतना शोषण किया है, कि पशुओं और पौधों के समूहों कि एक चौथाई प्रजातियों पर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है।
- यदि विश्व विकास के वर्तमान मॉडल को सूचारू रूप से जारी रखता है एवं इसमें पर्यावरणीय लागत को एक कारक के रूप में वह शामिल नहीं करता है तो लगभग 1 मिलियन प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो सकता है।
- भूमि और जल के सतत उपभोग, प्रजातियों को नष्ट करना, जलवायु परिवर्तन; प्रदूषण और नए निवास स्थानों में विदेशी पौधों और जानवरों के निवास से पारिस्थितिकी तंत्रों के विनाशकारी क्षरण को बढ़ावा मिल रहा है।
- पिछले पाँच दशकों में सार्वभौमिक रूप से पारिस्थिति तंत्र को नुकसान पहुँचा है।
- इस रिपोर्ट में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में होने वाले क्षरण पर अधिक चिंता व्यक्त की गई है क्योंकि ये दूसरों की तुलना में अधिक जैव-विविधता से संपन्न है। दुनिया भर में केवल एक चौथाई भूमि अब अपनी पारिस्थितिक और विकासवादी अखंडता को बरकरार रख पा रही है। पारिस्थिति तंत्र सेवाएं अक्सर उत्पादकता के अनुमानों में शामिल नहीं होते हैं।
- IPBES के अनुमानों के अनुसार इन नीतियों का परिणाम यह है कि पिछले 10 मिलियन वर्षों के औसत दर की तुलना में प्रजातियों के विलुप्त होने की वैश्विक दर आज 10 गुना अधिक हो गई है तथा यह तेजी से बढ़ रहा है।

आर्थिक क्रियाओं का पर्यावरणीय परिदृश्य -

- पारिस्थितिकी अर्थशास्त्रियों के अनुसार मनुष्य, अपनी घरेलू, कृषि और खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा औद्योगिक जरूरतों के लिए मीठे और खारे जल का अत्यधिक उपभोग कर रहा है। वनों को काटकर खाद्य उत्पादन बढ़ाने, निवास स्थल का निर्माण करने, खनन करने से जल उपलब्धता, परागण, घरेलू पौधे और जंगलों के साथ अन्य कार्य बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। प्रदूषण से होने वाले नुकसानों को आमतौर पर राष्ट्रों द्वारा दी गई प्रगति के दावों में शामिल नहीं किया जाता है।
- IPBES के आकलन के अनुसार जल प्रदूषण, जैव प्रदूषण से 1980 के बाद कम से कम 267 प्रजातियां प्रभावित हुई हैं। खाद्य और कृषि के लिए उपयोग की जाने वाली स्तनधारियों की 6,190 घरेलू नस्लों में से 9% , 2016 तक विलुप्त हो चुके हैं।
- आकलन के अनुसार, ये प्रजातियां पिछले एक करोड़ वर्ष की तुलना में हजारों गुणा तेजी से विलुप्त हो रही हैं। ये प्रजातियां जिस तरह से विलुप्त हो रही हैं, उसे देखते हुए ऐसी संभावना है कि डायनोसॉर के विलुप्त होने के बाद से पृथ्वी पर पहली बार इतनी बड़ी संख्या में प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो गया है।
- रिपोर्ट में बताया गया है कि किस प्रकार हमारी प्रजातियों की बढ़ती पहुंच और भूख ने सभ्यता को बनाए रखने वाले संसाधनों के प्राकृतिक नवीनीकरण को संकट में डाल दिया है। अक्टूबर की अपनी रिपोर्ट में संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण विज्ञान पैनल ने ग्लोबल वार्मिंग के संबंध में भी इसी प्रकार की गंभीर तस्वीर पेश की थी।

- रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रकृति को बचाने हेतु बड़े बदलावों की आवश्यकता है। हमें करीब-करीब प्रत्येक चीज के उत्पादन एवं पैदावार और उसके उपभोग के तरीके में बदलाव करना होगा।
- कृषि और पौधों के साथ जानवरों की प्रजातियों पर मड़रा रहे खतरे से विश्व को सावधान हो जाना चाहिए। सभी आर्थिक गतिविधियों में जैव विविधता प्रभाव को शामिल किया जाना चाहिए।

विशेष-

- **IPBES(Inter Governmental Science-Policy Platform on Biodiversity and Ecosystem Services)**
 - जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतर सरकारी विज्ञान नीति प्लेटफॉर्म संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के तहत यह एक स्वतंत्र अंतर सरकारी निकाय है जो जैव विविधता, दीर्घकालिक मानव कल्याण और सतत विकास के संरक्षण तथा स्थायी उपयोग के लिए जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं हेतु विज्ञान नीति इंटरफेस को मजबूत करने का काम करता है।
- **पारिस्थितिकी तंत्र-** इसके अंतर्गत पर्यावरण और उसके विभिन्न कारकों के बीच पारस्परिक संबंधों की भूमिका पर बल दिया जाता है इसके अंतर्गत जैविक और अजैविक कारक एक जटिल तंत्र के रूप में कार्य करते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र प्रकृति की मूल संरचनात्मक और कार्यात्मक ईकाई है।
- **जैव विविधता** - जैव विविधता के अंतर्गत सजीवों के सभी रूपों में पायी जाने वाली किस्मों और विभिन्नताओं को शामिल किया जाता है। अर्थात किसी क्षेत्र में प्राकृतिक अवस्था में पाये जाने वाले जीवन के सभी रूपों, वनस्पतियों, जंतुओं और सूक्ष्म जीवों को परिभाषित किया जाता है। वहीं वन्यजीवन किसी विशेष रूप से जंतुओं की समष्टि पर केंद्रित है।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न - जैव-विविधता एवं पारिस्थितिक तंत्र को मानवीय आर्थिक क्रियाकलापों ने सर्वाधिक क्षति पहुँचाई है। क्या आर्थिक वृद्धि को हासिल करने के लिए 'ट्रस्टीशिप सिद्धान्त' प्रभावी होगा?